RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

दलितों के उत्थान में महात्मा गाँधी की भूमिका

प्रियंका सिंह

शोध छात्रा (राजनीति विज्ञान विभाग), भू0ना0 मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा।

महात्मा गाँधी ने भारतीय समाज में छुआछूत का अंत और सामाजिक न्याय पर आधारित व्यवस्था को अपने उद्देश्य एवं लक्ष्य के रूप में सामने रखा। भारतीय समाज में व्याप्त सबसे बड़ी कुरीति के रूप में छुआछूत या अस्पृश्यता को माना जाता है। अस्पृश्यता समाज का एक बड़ा कोढ़ है।

गाँधी ने अछूतो के संबंध मे लिखा था ''समाज उनका बहिस्कार करता है, आर्थिक दृष्टि से उनकी दशा और भी खराब है और धार्मिक दृष्टि से उन्हे उन स्थानो पर प्रवेश की अनुमति नही है जिन्हे ''ईश्वर के निवास'' की संज्ञा दी गई है । यदि हम छुआछूत को नही मिटायेंगे तो स्वयं मिट जायेंगे ।

गाँधी ने 30 सितम्बर 1932 को छुआछूत विरोधी संघ की स्थापना की थी। बाद मे उसका नाम बदलकर ''हरिजन सेवक संघ'' कर दिया था । इसी के बाद भारत के अछूत ''हरिजन'' कहकर संबोधित किये गये । 1935 मे अगस्त माह मे महात्मा गाँधी ने छुआछूत के विरोध मे आन्दोलन प्रारंभ किया था, और हिन्दुओ की अंतरात्मा को जगाने के उद्देश्य से गाँधी ने मई 1933 मे 21 दिनो का उपवास किया । इस प्रकार महात्मा गाँधी ने छुआछूत एवम् अस्पृश्यता को हटाने के लिए अनवरत प्रयास आरंभ किये।

गाँधी जी का प्रारंभ मे उद्देश्य जाति प्रथा को जड़मूल से उखाड़ने का नहीं था । वे जाति प्रथा मे सुधार लाना चाहते थे, ताकि यह प्रथा विघटित नही होने पाये । उन्होने इस संबंध मे कहा भी था ''जाति प्रथा को समाप्त करने का सबसे प्रभावशाली फलदायी तरीका यह है कि सुधारक स्वयं इस प्रकार का आचरण करे कि मानो जाति है ही नही और यदि उन्हे इस आचरण मे दुख भी उठाना पड़े, तो सहर्ष उसे स्वीकार करें । वांछनीय यह है कि सवर्ण लड़कियाँ हरिजन से विवाह करे । यदि मेरा वश चले तो मैं अपने प्रभाव मे आने वाले सभी सवर्ण हिन्दू लड़के–लड़कियो को इस बात के लिए तैयार कर दूँगा कि वे हरिजनो से विवाह करें ।

गाँधी ने एक बार कहा था कि ''मेरी प्रार्थना है कि यदि मेरा पुनर्जन्म होता तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य था शुद्र के रूप मे ना हो बल्कि अति शुद्र के रूप मे हो, ताकि मै उनके कष्टों, दुःखो तथा अपमानों का भागीदार बनकर स्वयं को और उन्हे इस दयनीय स्थिति से छुटकारा दिलाने की कोशिश कर सकूँ। प्रथायें परम्परायें या मान्यताऐं जिनसे व्यक्ति का तिरस्कार या उपमान होता हो, उनका निषेध करके ही व्यक्ति की गरिमा को साकारात्मक रूप दिया जा सकता है ।

अछूत कहे जाने वाले व्यक्तियो को गाँधी ने 'हरिजन' शब्द कहकर पुकारा। सर्वप्रथम हरिजन शब्द का साहित्यिक प्रयोग गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में किया था । जहाँ सीता ने हनुमान जी को 'हरिजन' मानकर स्नेह किया है । अतः यह अनुमान उचित प्रतीत होता है कि गाँधी ने यह शब्द रामचरित मानस से ही ग्रहन किया होगा । राम के चरित्र का उनके जीवन पर विशेष प्रभाव था और राम के ही राज्य व्यवस्था से ही उनके राज्य का आदर्श प्रेरित था । इस अनुमान का द्वितीय आधार यह है कि ''जिस अर्थ मे सीता ने हनुमान को हरिजन माना उसी अर्थ मे गाँधी ने अछूतो को परमात्मा का सबसे प्रिय वर्ग माना ।

गाँधी ने कहा कि लोगो के प्रति प्रेम ने छुआछूत की समस्या मेरे बाल्य काल मे उठा दी थी । मेरी माँ ने कहा – ''इस बच्चे को मत छूना'' यह अछूत है, ''क्यों ना छूऊँ, मैने पलट कर पूछा और उसी दिन से मेरा विद्रोह प्रारंभ हो गया ।'' भारत की जनसंख्या के पाँचवे हिस्से को यदि हम सदैव के लिए पराधीन रखना चाहें और उन्हें राष्ट्रीय संस्कृति की उपलब्धियों से जानबूझकर वंचित रखें तो स्वराज्य का कोई महत्त्व नही है । हम इस महान शुद्धि आन्दोलन मे भगवान की सहायता चाहते है । लेकिन उसकी सृष्टि के सर्वाधिक सुपात्र प्राणियो को मानवता के अधिकार देना नही चाहते । यदि हम स्वयं अमानवीय हैं तो दूसरों की अमानवियता से मुक्ति पाने के लिए ईश्वर की याचना कैसे कर सकते है ? !

मनुष्य को धर्म की पवित्रता के नाम पर उत्पीड़न करते जाना हठ धर्म के अलावा कुछ नही है । हिन्दू धर्म के सुधार तथा उसके वास्तिविक संरक्षण के लिए छुआछूत को मिटाना एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है ।

गाँधी ने कहा कि ''मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि छुआछूत कायम रहने से हिन्दू धर्म का खत्म हो जाना ही अच्छा है । छुआछूत से तथा उस संघर्ष के लिए स्वयं को अर्पित करने मे मेरी आकांक्षा मानव जाति के सम्पूर्ण पुनरूद्धार की है । यह

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

सीप मे चाँदी के आभाष की तरह मात्र एक स्वप्न ही होकर रह सकता है ।

अंग्रेज भारत में शिक्षा का प्रचार–प्रसार करके यहाँ की रूढ़िवादिता को समाप्त करना चाहते थे । अंग्रेजी शासन का यह प्रभाव अनुसूचित जाति और जनजाति के उत्थान के दिशा में उठाया गया मील का पत्थर था । उस समय थोड़ा बहुत अन्तर्राजातीय विवाह होने लगे थे । विधवा विवाह, जाति प्रथा इत्यादि सामाजिक बुराइयों का जब अंत हो रहा था, उस समय ब्रह्मण समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन इत्यादि संस्थायें जातीय भेदभाव की कटु आलोचना करने में जुटी हुई थी । उस समय उँच–नीच की भावना और छुआछूत की भावना कुछ हद तक शिथिल हुए । यह एक ऐसा प्रयास था जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि अंग्रेजी शासन काल में अछूतो के उद्धार के लिए गैर सरकारी स्तर पर भरपूर प्रयास किये गये थे ।

ज्योतिवाराव फूले ने पहली बार अस्पृश्य जातियो को संगठित करने का प्रयास किये थे । उसके बाद भीम राव अम्बेदकर ने 1920 में अखिल भारतीय दलित वर्ग संघ की स्थापना और 1932 में गाँधी के द्वारा हरिजन सेवक संघ की स्थापना हुई, इस संघ में स्वर्ण हिन्दू भी थे । जिन्होंने अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन को गति देने में प्रयास किया था । इसके बाद रामकृष्ण मिशन तथा उन्य संस्थाओ ने उन बंधनों को समाप्त करने मे योगदान दिया, जिनकी वजह से अछूत और नीच कहलाते थे । इसी समय अनेक सुधार समितियो का गठन किया गया था । भारत की स्वतंत्रता से पूर्व अछूतो के उद्धार के लिए सबसे अधिक योगदान मोहनदास करमचंद गाँधी के द्वारा दिया गया था । उन्होने सामाचार पत्रों का दामन थाम कर ''यंग इंडिया'' और ''हरिजन'' में अपने विचारो को व्यक्त किया ।

गाँधी के अनुसार जीवन के सत्य का अधिक से अधिक अनुभव करना मानव जीवन का लक्ष्य है। परन्तु गाँधी के अनुसार सत्य का अनुभव केवल व्यक्तिक साधना और नैतिक आचरण के द्वारा नहीं होता है। बल्कि मानव जीवन के समस्त पहलुओं सामाजिक, राजनीतिक धार्मिक, आर्थिक इत्यादि को पवित्र बनाने से होता है। गाँधी के अनुसार हमारा उद्देश्य अधिक से अधिक ईश्वरीय शक्ति को प्राप्त करना है। परन्तु ईश्वर सभी जीवों का समूह है। अतः ईश्वर या मोक्ष की प्राप्ति का सर्वोत्तम मार्ग समाज की गरीबी, विषमता शोषण और दूखों को मिटाना है। समाज में विषमता उत्पन्न करना हिंसा है। जिसके परिणामस्वरूप हमें प्राकृतिक अशुभ जैसे भुकम्प, बाढ़ आदि का सामना करना पड़ता है। गाँधी के अनुसार प्रेम के द्वारा मानव अधिक से अधिक ईश्वरीय शक्ति को प्राप्त कर सकता है। जिसकी अभिव्यक्ति सभी प्राणीयों की निष्काम सेवा की माध्यम से होती है। निष्कर्मता को अधिक से अधिक प्राप्त करना मानव का उद्देश्य है। गाँधी के अनुसार निम्न से निम्न कोटि का व्यक्ति भी अपने पुरूषार्थ के द्वारा सद्गुणों का विकास कर मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। अतः सभी को मोक्ष प्राप्त करने का अधिकार है। और सामुहिक मोक्ष को प्राप्त करना मानव का उद्देश्य है।

गाँधी के अनुसार व्यक्ति स्वतंत्रता की प्राप्ति एकाएक पूर्णता में करता है। धीरे–धीरे नहीं। जिस प्रकार व्यक्ति का जन्म समग्र रूप में होता है उसी प्रकार स्वतंत्रता का भी अखंडित रूप में आग्रिभाव होता है। आन्तिरिक स्वतंत्रता का अभिप्राय आत्मा का अविधा से मुक्त होना है। बाह्य स्वतंत्रता का अर्थ आर्थिक राजनीतिक सामाजिक आदि स्वतंत्रता से है। गाँधी यह मानते है कि आन्तरिक स्वतंत्रता प्राप्त करने पर ही व्यक्ति बाह्य स्वतंत्रता प्राप्त कर सकता है। अतः व्यक्ति को अन्य बाहरी स्वतंत्रता की प्राप्ति के पूर्व अंतः करण की स्वतंत्रता प्राप्त करनी चाहिए। गाँधी के अनुसार केवल बौद्धिक विकास से ही स्वतंत्रता नहीं आती है। वास्तिविक स्वतंत्रता हृदय की गहराई में पहुँचने से आती है, जो अन्य प्राणियों की पीड़ा पहचानने और उनके साथ प्रेम करने से प्राप्त होती है।

गाँधी यह मानते है कि आदर्श समाज की स्थापना आदर्श व्यक्ति से ही हो सकती है, जो व्यक्ति के लिए शुभ है वही समाज के लिए भी शुभ है। आदर्श समाज की स्थापना के लिए व्यक्ति को पहले आदर्श बनाने की आवश्यकता है। समाज में क्रांति एकहरी नहीं दोहरी प्रक्रिया से आती है। पहले व्यक्ति के मानस में परिवर्तन लाना पड़ता है। उसके जीवन मूल्यों और विचार पद्धतियों को बदलना पड़ता है। और अंत में समाज के बाह्य ढ़ाँचे में परिर्वतन लाना पड़ता है। केवल समाज के बाहरी ढ़ाँचे में परिवर्तन करने से कोई विशेष फल प्राप्त नहीं होता। आदर्श समाज की स्थापना करने के लिए व्यक्ति को निर्णय लेने में स्वावलम्बी होना चाहिए। उसे अपनी आत्मशक्ति को पहचानना चाहिए। इसके अतिरिक्त सामाजिक परिस्थितियों में अभियोजित करने की तत्परता होनी चाहिए और अपनी आस्था का आदर करना चाहिए। बिना आस्था के व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता।

आज पूरी दुनियाँ एक विकल्प की तलाश में है। गांधीवाद इसका उत्तर और विकल्प देता है। महात्मा गांधी का महत्तव शाश्वत है। उनके राजनीतिक विचारों में धार्मिक शुद्धता से लेकर राजनीतिक योग्यता तक विविध आयाम है। गांधीजी के लिए राजनीति एक व्यवसाय नहीं बल्कि एक सेवा थी। वह राजनीति के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों को लागू करते थे। वास्तव में वह भारतीय परम्परा के कर्मयोगी थे। उनके नैतिक एवं राजनीतिक विचार का सहज रूप से उनकी धार्मिक और नीति

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

परक धारणाओं से जुड़े हुए हैं। ऐसे विचारों का गहन अध्ययन हमेशा आवश्यक होता है। गांधी का परम लक्ष्य था – 'सर्वजन हिताय'। हित का अर्थ उनके लिए व्यक्तियों या समाज का भौतिक कल्याण नहीं बल्कि आत्म बोध था गाँधी वादी सिद्धांत इस युग की सबसे बड़ी चुनौती का सामना करने में पूर्ण सक्षम सिद्धांत है।

मानव प्रकृति की अच्छाई, जन सेवा, अछूतोदार एवं हरिजन की अवधारणा, अहिंसक परिवर्त्तन की प्रक्रिया, सामाजिक और आर्थिक समानता, आर्थिक और राजनीतिक विकेन्द्रीकरण तथा सर्वोदय का उनका दर्शन उन विभिन्न प्रकार के तनावों को दूर करने की कोशिश करता है, जो राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावों को बिगाड़ते है। गाँधी के विचार प्रेम, रचनात्मकता एवम् जीवन को संयमित बनाने में सक्षम् है। इसमें मानव को समग्र रूप में देखा जाता है एवम् उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति में ध्यान दिया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

(i) कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी – देल्ही पब्लिकेशन डीविजन।
(ii) लूई फीशर – ए वीक् वीथ गाँधी – न्यूयार्क (1942)
(iii) रविन्द्र गाँधी – थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस ऑफ गांधीयन नन वायोलेन्स – 2002 में।
(iv) मनमोहन चौधरी – एक्सप्लोरिंग गांधी – 1999
(v) वसंत कुमार बाबा – गाँधी इन द टवेन्टी फर्स्ट सेन्चुरी (एन अल्टनेटिव एपरोच टू डेवलपमेंट) – 1999
(vi) गंगाधर बालाकृष्णन् सरदार – गाँधी और अम्बेडकर

© RRIJM 2015, All Rights Reserved